शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

शोध अध्ययन की मूलभूत आवश्यकता संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

डॉ लक्ष्मण शिंदे
विभागाध्यक्ष, भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शोध कार्य सामाजिक विकास की अवधारणा की पुष्टि की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। शोध कार्य की दिशा और स्वरूप का निर्धारण करना आवश्यक है। देशकाल और परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। उक्त पहलुओं को कसौटी पर रखकर कार्य को संपादित करना शोध कार्य से संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना असंभव है। इससे अन्य शोध अध्ययनों के परिणामों से संबंध का पता चलता है। यह अध्ययन के महत्व को स्थापित करने की रूपरेखा प्रदान करते हैं। साथ ही साथ परिणामों की तुलना के द्वारा अध्ययन के मुख्य बिन्दुओं को भी प्रदर्शित करते हैं।

प्रस्तावना

"साहित्य का पुनरावलोकन किसी शोध प्रकरण पर चयनित दस्तावेज अथवा दस्तावेजों का प्रभावशाली मूल्यांकन है।" शोध कार्य का पुनरावलोकन शोधार्थी द्वारा पूर्व में किए गये शोध कार्य का व्यवस्थित एवं आलोचनात्मक संश्लेषण है।

शोध कार्य का पुनरावलोकन शोधार्थियों को उनके शोध से संबंधित मूलभूत प्रश्नों के उत्तर प्रदान करता है। शोधार्थी क्या करना चाहता है-शोध कार्य की प्रस्तावना अथवा भूमिका किस प्रकार प्रस्तुत की जाए- इसके प्रति जागरूकता और विश्वासपूर्ण मार्गदर्शन मिलता है। पूर्व में शोधार्थी की समस्या से संबंधित कार्यों के अध्ययन से शोधार्थी को पता चलता है कि दूसरों ने क्या किया और वह क्या करना चाहता है- यहां पर शोधार्थी अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। शोध कार्य के पुनरावलोकन से शोधार्थी को यह भी ज्ञात होता है कि अन्य शोधार्थी इस बारे में क्या कहते हैं- अर्थात वह प्रत्यक्ष रूप से साहित्य से परिचित होता है- अलग-अलग दृष्टियों से समस्या को देखने का अवसर प्राप्त होता है। संबंधित साहित्य के अध्ययन से शोधार्थी को ज्ञात होता है कि अन्य शोधार्थियों की योजना क्या थी- अर्थात अपने शोध कार्य की रूपरेखा का निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

शोध कार्य के पुनरावलोकन से शोधार्थी को ज्ञात होता है कि जब उसने स्वयं कार्य किया तब उसे क्या मिला और उसने क्या स्थापित किया और किस निष्कर्ष पर पहुंचा। किसी भी साहित्य, विशेष रूप से शोध अध्ययन को पुनरावलोकित रूप में प्रस्तुत करने अथवा सार रूप में प्रस्तुत करने के लिए मुख्यरूप से, शोधार्थी का नाम, वर्ष, शीर्षक, उद्देश्य, प्रतिदर्श अथवा न्यादर्श एवं परिणाम अथवा निष्कर्ष/शोधार्थी के शोध अध्ययन के प्रकार का आवश्यकतानुसार उल्लेख कर, प्रस्तुत किया जाता है।

एक शोधार्थी द्वारा शोध कार्य का पुनरावलोकन, साहित्य की खोज करने से- शोधार्थी को, जिज्ञासु प्रकृति के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

तत्पश्चात खोजे गए/प्राप्त साहित्य की छंटनी करने की अपनी समस्या से संबंधित साहित्य कौन-सा है, क्या प्राथमिकता के आधार पर शामिल करना चाहिए- यह सब ज्ञात होता है।

शोधार्थी को शोध पत्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके अपने शोध कार्य की प्रासंगिकता की पुष्टि के लिए प्रस्तुत होना चाहिए। इसी प्रकार शोध पत्रों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करके अपने शोधकार्य के विशिष्ट स्वरूप को पुष्ट/प्रतिपादित करना चाहिए। साहित्य के पुनरावलोकन से शोधार्थी को अपने शोध कार्य को संग्रहित करने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य/शोध कार्य के उद्देश्यों, परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी एक नवीन सोच के साथ अपने उद्देश्यों का/परिकल्पना का निर्धारण कर सकता है।

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से शोधार्थी में अपने शोध कार्य को करने के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है, कार्य की पुनरावृत्ति से बचता है तथा संभावित कठिनाईयों के प्रति सजग रहता है। इसके साथ ही प्राप्त परिणामों की तर्कसंगत विवेचना कर परिणामों /निष्कर्षों को युक्तिसंगत बनाता है। इस प्रकार शोधार्थी अपने शोध कार्य को एक सामान्यीकरण की प्रक्रिया तक ले जाता है और कार्य को मौलिक स्वरूप प्रदान करता है।

उद्देश्य

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन करने का उद्देश्य शोध कार्य के लिए एक निश्चित वातावरण प्रदान करना तथा शोध कार्य की सार्थकता की पुष्टि करना होता है। यह सुनिश्चित करना कि इस प्रकार का कार्य पहले नहीं हुआ या किया जाने वाला कार्य महज पुनरावृत्ति नहीं है। संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अपनी शोध समस्या को विशिष्ट स्वरूप देना समस्या पर पुनःकेन्द्रण

और यदि आवश्यक हुआ तो समस्या को परिवर्तित रूप में प्रस्तुत करना संभव होता है। पूर्व में किए गये शोध कार्य का अध्ययन वर्तमान में किए जाने वाले शोध अध्ययन के अंतराल तथा अध्ययन की वर्तमान प्रासंगिकता को प्रतिपादित करना होता है।

स्रोत

संबंधित साहित्य के अध्ययन हेतु शोधार्थी पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, पूर्व में किये गये शोध कार्य, शोध परिणाम, शोध आलेख, संगोष्ठियां, सम्मेलन, समाचार पत्र आदि अन्य सम्बंधित प्रामाणिक दस्तावेजों का उपयोग कर सकते हैं।

पुस्तकें

साहित्य के पुनरावलोकन में पुस्तकें शोधार्थी द्वारा किए जा रहे शोध कार्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शोध में निहित सामाजिक परिदृश्य आदि का व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण कर शोधकार्य की प्रासंगिकता, महत्व और क्लिष्टता को कम किया जा सकता है। पुस्तकें शोध कार्य की पारिभाषिक तकनीकी शब्दावली की व्याख्या करने में सक्षम होती है।

संदर्भ ग्रंथ

यह विषय विशेष के परिप्रेक्ष्य में प्रामाणिक और सारगर्भित साहित्य होता है। इसमें विषय वस्तु का आलोचनात्मक विश्लेषण होता है।

पूर्व शोध कार्य

पूर्व में किए गए शोध कार्य साहित्य के पुनरावलोकन के महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं। विभिन्न शोधार्थियों द्वारा अलग-अलग परिस्थितियों में एवं स्वरूपों में शोध कार्य के

संपादन का निष्पादन किए गए शोध में प्रस्तुत होता है। ऐसी स्थिति में नवीन परिस्थितियों में समस्या के वास्तविक और प्रासंगिक स्वरूप का सृजन करना शोधार्थी के लिए अपेक्षाकृत आसान हो जाता है।

शोध पत्रिकाएं

शोध पत्रिकाएं भी स्रोत हो सकती हैं, क्योंकि देश, विदेश के शोधार्थियों द्वारा किए गए कार्यों का प्रस्तुतिकरण शोध पत्रिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत होता है। इन्हें भी शोधार्थी स्रोत के रूप में उपयोग कर अपने शोध कार्य को प्रासंगिक बना सकता है।

शोध आलेख

संबंधित साहित्य के अध्ययन से शोधार्थी द्वारा शोध आलेख को भी प्रस्तुत कर सकता है। शोधार्थी/विशेषज्ञ का अपना अनुभव प्रतिपादित करते आलेख शोध को एक नवीन दिशा प्रदान कर सकते हैं।

सम्मेलन और संगोष्ठियां

सम्मेलन और संगोष्ठियां भी साहित्य के पुनरावलोकन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। विभिन्न शोधार्थियों और विद्वानों के प्रस्तुतिकरण एवं उदबोधन शोध कार्य की दिशा का निर्धारण करने में सहायक होते हैं।

समाचार पत्र

समाचार पत्रों में विभिन्न विषयों से संबंधित लेख घटनाओं को प्रायः प्रमुखता से स्थान दिया जाता है। साथ ही यह माध्यम अपने सूचना तंत्र के द्वारा वातावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का भी कार्य करता है, ऐसी स्थिति में आसपास व अन्यत्र संबंधित कार्यक्रमों के बारे में और कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप शोधार्थी को शोध को परिष्कृत रूप में प्रस्तुत करने अथवा संपादित करने में सहायता करते है।

संदर्भ

1 Creswel, J.W.: Research Design, Sage Publication, India, Pvt. Ltd., 2011.

2 Dececco,J.P. Educational Psychology, Prentice Hall, New Delhi, 1980.

3 Good, C.V. Dictionary of Education, Mcgraw Hill Book Co. Inc. Newyork, 1973.

4 Kerlinger, F.N.: Fundamentals of Behavioral Research, Surjeet Publication, New Delhi, 1998.

5 Koul, Lokesh,: Methodology of Educational Research, Vikas Publication House, Pvt. Ltd., New Delhi, 1984.